खाटू श्यामजी

वाया सीकर 120 किमी. दूरी पर स्थित खाटूधाम में श्री श्याम मन्दिर, श्याम बगीची, श्याम कुण्ड तथा अनेक छतरियां हैं। यह मन्दिर वि. सं. 1977 में निर्मित हुआ था। यहाँ पर श्री श्याम बाबा के बारे में कहा जाता है कि महाभारत काल में भीम के वीर पुत्र घटोत्कच के बाद नागकन्या अहिल्या से भीम पुत्र बर्बरीक की श्याम नाम से आराधना होती है। कहते हैं कि महाभारत युद्ध के समय बर्बरीक शिव द्वारा प्राप्त तीन बाण लेकर युद्ध देखने की इच्छा से रणभूमि की तरफ आ रहा था उस समय श्रीकृष्ण ने इनकी ब्राह्मण वेश धरकर परिक्षा ली थी। जब पत्ताछेदन के लिए बर्बरीक द्वारा तरकस से निकाल कर तीर छोड़ा गया जो कि सभी पत्तों को भेदता हुआ श्रीकृष्ण द्वारा पैर के नीचे छिपाये पत्ते की तरफ आकर उसे भी भेद कर वापस तरकस में जा लगा। श्रीकृष्ण द्वारा पूछने पर बर्बरीक ने बताया कि मैं हारने वाले की तरफ से युद्ध करूंगा। यही आदेश मुझे मेरी माता व शिव जी द्वारा प्राप्त है।

जब रणभूमि में बर्बरीक के पहुँचने पर श्रीकृष्ण और पान्डवों से बातें हुईं तो श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से रणपूजा विधि में रणभूमि दान के लिए शीश का दान मांगा तब बर्बरीक ने तुरन्त हंसते हंसते शीश का दान दिया तथा बर्बरीक की युद्ध को देखने की प्रबल इच्छा को देखते हुए श्रीकृष्ण द्वारा रणभूमि में एक बड़ा ऊंचा खम्भ बनाकर शीशे को वहां विराजमान किया।

युद्ध पूर्ण होने पर जब पांचों पान्डव अपनी अपनी वीरता का बखान कर रहे थे तो शीश ने ही बताया कि युद्ध में मैने केवल श्रीकृष्ण का चक्र चलते देखा तथा काली अम्बे खप्पर धारी को ही लह से खप्पर भरकर पीते देखा।

तभी श्रीकृष्ण ने बर्बरीक को वरदान दिया था कि कलयुग में श्याम नाम से ही तुम्हारी ही पूजा होगी।

खाटूधाम में श्री श्याम मन्दिर आने वाले सभी भक्तों की मनोइच्छा पूरण होती है यहां मुख्य मेला हर वर्ष फागुन सुदी 12 को लगता है।